IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बिहार में 1857 की क्रांति: दलितों, जनजातियों और महिलाओं के योगदान का ऐतिहासिक विश्लेषण

हिमांशु कुमार राय

शोधार्थी, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, सारण

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध आलेख 1857 के भारतीय स्वाधीनता संग्राम में बिहार के संदर्भ में हाशिए के समुदायों—विशेषकर दलितों, आदिवासियों और महिलाओं—की भूमिका का गहन एवं बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। मुख्यधारा के इतिहास लेखन में अक्सर इन समुदायों के योगदान को 'सिपाही विद्रोह' या 'सामंती विद्रोह' के व्यापक आवरण के पीछे गौण माना गया है। हालाँकि, समकालीन सबाल्टर्न (Subaltern) शोध और लोक-स्मृतियों का विश्लेषण यह प्रमाणित करता है कि बिहार में यह क्रांति एक व्यापक 'जनांदोलन' थी। इस अध्ययन में नवादा के राजवारों के दीर्घकालिक सशस्त्र संघर्ष, पलामू के नीलम्बर-पीताम्बर जैसे जनजातीय नायकों के छापामार युद्ध और महिलाओं की रणनीतिक भागीदारी को केंद्र में रखा गया है। शोध यह सिद्ध करने का प्रयास करता है कि इन समुदायों के लिए क्रांति केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि 'कामिया' प्रथा (बंधुआ मजदूरी) जैसी आर्थिक दासता और औपनिवेशिक भूमि नीतियों से मुक्ति का एक सशक्त माध्यम थी। प्राथमिक स्रोतों, लोकगीतों और क्षेत्रीय वृत्तांतों के माध्यम से यह लेख 1857 की क्रांति को एक समावेशी सामाजिक आंदोलन के रूप में पुनर्व्याख्यायित करता है।

कीवर्ड (Keywords): 1857 की क्रांति, बिहार का इतिहास, दलित भागीदारी, जनजातीय विद्रोह, महिला स्वतंत्रता सेनानी, राजवार विद्रोह, नीलम्बर-पीताम्बर, वीर कुंवर सिंह, कामिया प्रथा, सबाल्टर्न स्टडीज।

प्रस्तावना: बिहार में 1857 का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

1857 का भारतीय स्वाधीनता संग्राम भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में वह युगांतकारी मोड़ था, जिसने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की व्यापारिक और प्रशासनिक नींव को हिलाकर रख दिया । बिहार, अपनी विशिष्ट भौगोलिक और सामाजिक बनावट के कारण, इस महासमर के सबसे प्रभावशाली और जीवंत केंद्रों में से एक बनकर उभरा । जहाँ उत्तर प्रदेश में विद्रोह का स्वरूप सैन्य और कुछ हद तक नागरिक था, वहीं बिहार में यह संघर्ष अत्यंत विकेंद्रीकृत और बहुआयामी था, जिसमें समाज के निचले स्तर के लोगों ने अपनी उपस्थिति पूरी मुखरता के साथ दर्ज कराई ।

इतिहास के पारंपरिक पन्नों में बिहार के विद्रोह को अक्सर बाबू वीर कुंवर सिंह और उनके भाई अमर सिंह के पराक्रम तक सीमित रखा गया है । इसमें कोई संदेह नहीं कि जगदीशपुर के इन नायकों ने अदम्य सैन्य कौशल का परिचय दिया, परंतु इस व्यापक विद्रोह का जो आधार था, वह उन दलितों, आदिवासियों और महिलाओं के बलिदान से निर्मित हुआ था जो सदियों से दोहरे शोषण—औपनिवेशिक और स्थानीय सामंती—का शिकार थे । बिहार में यह विद्रोह केवल

रियासतों को बचाने का प्रयास नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक व्यवस्था द्वारा थोपे गए भूमि कानूनों, ऋणग्रस्तता और सामाजिक अपमान के विरुद्ध एक सामूहिक हुंकार थी ।

क्रांति के सामाजिक और आर्थिक मूल कारण: एक विश्लेषण

बिहार में 1857 की ज्वाला अचानक नहीं भड़की थी। इसकी जड़ें 1765 में ईस्ट इंडिया कंपनी को प्राप्त दीवानी अधिकारों और उसके बाद लागू किए गए त्रुटिपूर्ण भूमि बंदोबस्त प्रणालियों में निहित थीं । विशेष रूप से 1793 के स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement) ने बिहार की ग्रामीण सामाजिक संरचना को पूरी तरह अस्त-व्यस्त कर दिया था । इस प्रणाली ने पुराने जमींदारों को विस्थापित कर नए 'अनुपस्थित जमींदारों' (Absentee Landlords) को जन्म दिया, जिनके पास भूमि के प्रति कोई भावनात्मक लगाव नहीं था और उनका एकमात्र उद्देश्य अधिकतम राजस्व वसूली था ।

कामिया प्रथा और ग्रामीण असंतोष

मगध क्षेत्र (वर्तमान गया, नवादा, नालंदा) में 'कामिया' प्रथा प्रचलित थी, जो बंधुआ मजदूरी का एक अत्यंत अमानवीय रूप थी । यहाँ के दलित समुदाय, विशेषकर राजवार और मुसहर, पीढ़ियों से मामूली ऋण के बदले जमींदारों के यहाँ 'बंधुआ' बने हुए थे। औपनिवेशिक न्याय प्रणाली और पुलिस व्यवस्था इन शोषकों के पक्ष में खड़ी थी, जिसने इन समुदायों के भीतर एक ज्वालामुखी की स्थिति उत्पन्न कर दी थी । 1857 का विद्रोह इन समुदायों के लिए केवल फिरंगियों को भगाने का युद्ध नहीं था, बल्कि अपनी देह और आत्मा की गुलामी के दस्तावेजों को जलाने का अवसर था ।

अफीम और नील की खेती का प्रभाव

बिहार के मैदानी क्षेत्रों में ब्रिटिश प्रशासन ने अफीम और नील की जबरन खेती को बढ़ावा दिया, जिससे पारंपरिक कृषि चक्र प्रभावित हुआ । पटना और शाहबाद के क्षेत्रों में अफीम एजेंटों के कार्यालय और गोदाम औपनिवेशिक सत्ता के प्रतीक थे। यही कारण था कि 3 जुलाई, 1857 को पटना में जब पीर अली के नेतृत्व में विद्रोह हुआ, तो उनका पहला लक्ष्य अफीम एजेंट डॉ. लायल था, जिसकी हत्या ने इस शोषणकारी आर्थिक तंत्र पर कड़ा प्रहार किया ।

आर्थिक कारक	ऐतिहासिक प्रभाव	प्रभावित समुदाय
स्थायी बंदोबस्त (1793)	भूमि का मालिकाना हक छिनना और गरीबी	छोटे किसान, बटाईदार
कामिया प्रथा	पीढ़ीगत ऋण दासता	राजवार, मुसहर, दुसाध
जंगलात कानून	पारंपरिक वन अधिकारों का अंत	चेरो, खरवार, संथाल
अफीम का व्यापार	जबरन खेती और शोषण	ग्रामीण कृषक वर्ग

दलित समुदायों का ऐतिहासिक योगदान: सबाल्टर्न चेतना

इतिहासकार बद्री नारायण तिवारी और चारु गुप्ता के शोध कार्यों ने 1857 की क्रांति में दलितों की भूमिका को एक नया आयाम दिया है । बिहार और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में दलित वीरांगनाओं और योद्धाओं की कहानियाँ केवल लोक-स्मृतियों तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वे ब्रिटिश अभिलेखों में भी 'आतंक' और 'विद्रोह' के रूप में दर्ज हैं ।

राजवार विद्रोह: नवादा का विस्मृत संघर्ष

नवादा और गया के क्षेत्रों में राजवार समुदाय द्वारा किया गया विद्रोह शायद 1857 की क्रांति का सबसे लंबा चलने वाला नागरिक विद्रोह था । जहाँ मुख्यधारा का विद्रोह 1859 तक शांत हो गया था, वहीं राजवारों का प्रतिरोध 1867 तक जारी रहा। इस विद्रोह के मुख्य सूत्रधार जवाहर राजवार थे, जिन्हें 'राजा' की उपाधि दी गई थी ।
जवाहर राजवार का जन्म 1832 में गया जिले के पसई गाँव में हुआ था। वह मल्लविद्या और तलवारबाजी में निपुण थे। उनके नेतृत्व में राजवारों ने जमींदारों की कचहरियों पर हमला कर ऋण के दस्तावेजों को नष्ट कर दिया । ब्रिटिश प्रशासन को इस विद्रोह को दबाने के लिए नवादा की पहाड़ियों में बार-बार सैनिक अभियान भेजने पड़े। जवाहर राजवार 29 सितंबर, 1857 को युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त हुए, परंतु उनके बाद एतवा राजवार और कारू राजवार ने संघर्ष की मशाल थामे रखी । ब्रिटिश सरकार ने इस प्रतिरोध से इतनी भयभीत थी कि 1871 के 'आपराधिक

जाति अधिनियम' के तहत राजवारों, मुसहरों और पासी जैसी जातियों को 'जन्मजात अपराधी' घोषित कर दिया ।

रजित बाबा और दानापुर मुतयनी

25 जुलाई, 1857 को दानापुर में हुई सैन्य बगावत ने बिहार में क्रांति का रुख मोड़ दिया था । इस विद्रोह के पीछे रजित बाबा (जिन्हें स्थानीय लोग 'शहीद बाबा' के रूप में पूजते हैं) का गहरा प्रभाव था । रजित बाबा ईस्ट इंडिया कंपनी में एक निम्न श्रेणी के सुरक्षाकर्मी थे, परंतु उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी से सैनिकों के भीतर सुलग रहे असंतोष को ज्वाला में बदल दिया। उनके साथ सोहन दुसाध, सूरज मांझी और जोधन मुसहर जैसे दलित वीरों ने छापामार युद्ध के माध्यम से ब्रिटिश रसद और संचार व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया ।

दलित संवेदना और क्रांति का सूत्रपात

अक्सर 1857 की क्रांति की शुरुआत का श्रेय चरबी वाले कारतूसों को दिया जाता है, लेकिन इसकी मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में एक दलित नायक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी । वाराणसी और बैरकपुर के सैन्य छावनियों के निकट प्रचलित लोक कथाओं और ऐतिहासिक संदर्भों के अनुसार, जदामाली (या मातादीन भंगी) नामक व्यक्ति ने एक उच्च-जातीय ब्राह्मण सैनिक को पानी पिलाने से मना किए जाने पर उसे यह कहकर झकझोर दिया था कि "तुम्हारी जाति तब कहाँ जाएगी जब तुम गाय और सूअर की चरबी वाले कारतूसों को अपने मुँह से काटोगे?" । इस संवाद ने सैनिकों की सुप्त चेतना को जागृत किया और उन्हें यह अहसास कराया कि फिरंगी शासन उनकी धार्मिक और सामाजिक अस्मिता को नष्ट करने पर तुला है ।

जनजातीय प्रतिरोध: जल-जंगल-जमीन की रक्षा

बिहार और वर्तमान झारखंड के जनजातीय समुदायों ने 1857 के संग्राम को अपनी स्वायत्तता की बहाली के अवसर के रूप में देखा । इन समुदायों का संघर्ष औपनिवेशिक वन कानूनों और बाहरी लोगों (दिक्कू) के हस्तक्षेप के विरुद्ध था ।

नीलम्बर-पीताम्बर और पलामू का सशस्त्र संघर्ष

पलामू क्षेत्र (तत्कालीन बिहार का हिस्सा) में खरवार और भोक्ता जनजातियों के दो भाइयों, नीलम्बर और पीताम्बर शाही, ने विद्रोह का अभूतपूर्व नेतृत्व किया । उनके पिता चेमू सिंह एक स्थानीय जागीरदार थे, परंतु कंपनी की भेदभावपूर्ण नीतियों ने उन्हें विद्रोही बना दिया। 1857 में, जब देश के अन्य हिस्सों में विद्रोह की लहर उठी, तो नीलम्बर-पीताम्बर ने खुद को स्वतंत्र घोषित कर दिया ।
अक्टूबर 1857 में, उन्होंने 500 सशस्त्र आदिवासियों के साथ चैनपुर के उन जमींदारों पर हमला किया जो अंग्रेजों के प्रति वफादार थे । उन्होंने लेस्लीगंज और शाहपुर में ब्रिटिश प्रशासनिक कार्यालयों को तहस-नहस कर दिया। कमिश्नर डाल्टन को इस विद्रोह को दबाने के लिए मद्रास इन्फैंट्री और रामगढ़ घुड़सवार सेना का सहारा लेना पड़ा । नीलम्बर और पीताम्बर ने पलामू के ऐतिहासिक दुर्गों का उपयोग अपनी सैन्य गतिविधियों के लिए किया। अंततः, 28 मार्च, 1859 को उन्हें पकड़ लिया गया और लेस्लीगंज में एक पेड़ से लटकाकर फाँसी दे दी गई । उनकी शहादत आज भी जनजातीय लोकगीतों में गूंजती है।

संथाल और हो जनजातियों की भागीदारी

संथाल परगना में 1855-56 का 'संथाल हूल' भले ही 1857 से पहले हुआ था, लेकिन इसके क्रांतिकारी अवशेष 1857 के दौरान भी सक्रिय थे । संथालों ने स्थानीय विद्रोहियों और कुंवर सिंह की सेनाओं को रसद और भौगोलिक सूचनाएँ प्रदान कर सहायता की । इसी प्रकार, सिंहभूम के हो (Ho) जनजातियों ने राजा अर्जुन सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध कड़ा मोर्चा खोला, जिससे छोटानागपुर क्षेत्र में ब्रिटिश प्रशासन लंबे समय तक पंगु बना रहा ।

जनजातीय नेतृत्व और कुंवर सिंह के बीच समन्वय

ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि बाबू वीर कुंवर सिंह का जनजातीय नेताओं के साथ गहरा समन्वय था । कुंवर सिंह ने नीलम्बर-पीताम्बर और नकलायत मांझी जैसे नेताओं को पत्र लिखकर ब्रिटिश सेना के विरुद्ध संयुक्त कार्रवाई

का आह्वान किया था। डाल्टन ने अपनी रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख किया है कि यदि कुंवर सिंह की सहायता पलामू तक समय पर पहुँच जाती, तो ब्रिटिश सत्ता का वहाँ से उन्मूलन निश्चित था ।

जनजातीय नायक	जनजाति	क्षेत्र	परिणाम/शहादत
नीलम्बर शाही	खरवार/भोक्ता	पलामू	फाँसी (28 मार्च 1859)
पीताम्बर शाही	खरवार/भोक्ता	पलामू	फाँसी (28 मार्च 1859)
देवी बख्श राय	चेरो	पलामू	निर्वासन/संपत्ति की जब्ती
राजा अर्जुन सिंह	-	सिंहभूम	कड़ा संघर्ष और आत्मसमर्पण

महिलाओं की अदम्य शक्ति: रणक्षेत्र से गुप्तचर व्यवस्था तक

1857 की क्रांति में बिहार की महिलाओं ने उन रूढ़िवादी बेड़ियों को तोड़ दिया जिन्होंने उन्हें सदियों से घरेलू दीवारों तक सीमित रखा था। उनकी भूमिका केवल सहायक नहीं थी, बल्कि वे कई मोर्चों पर नेतृत्वकारी भूमिका में थीं ।

फूलो और झानो: वीरता की अमर गाथा

संथाल विद्रोह के अमर नायक सिद्धू और कान्हू की बहनें, फूलो और झानो, वीरता का वह प्रतीक हैं जिसने 1857 की क्रांति के लिए मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने अपनी अदम्य साहस का परिचय देते हुए ब्रिटिश सेना के शिविर में घुसकर 21 सैनिकों को अपनी कुल्हाड़ियों से मार गिराया था। यद्यपि उनकी शहादत 1855 के अंत में हुई, लेकिन उनकी वीरता की गाथाएँ 1857 के दौरान बिहार और बंगाल के विद्रोहियों के लिए सबसे बड़ी प्रेरणा बनी रहीं ।

धरमन बीबी: कुंवर सिंह की सैन्य सलाहकार और संगिनी

बिहार के इतिहास के पन्नों में कुंवर सिंह की वीरता के साथ उनकी संगिनी धरमन बीबी का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित होना चाहिए। धरमन बीबी न केवल कुंवर सिंह की पत्नी थीं, बल्कि वे उनकी युद्ध रणनीतियों में सक्रिय भागीदार थीं। 1857-58 के दौरान जब कुंवर सिंह ने बिहार से बाहर उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के क्षेत्रों में ब्रिटिश सेना को छकाया, तो धरमन बीबी उनके साथ साये की तरह रहीं । कालपी के प्रसिद्ध युद्ध में उन्होंने वीरतापूर्वक लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दी । आरा और जगदीशपुर में उनके द्वारा बनाई गई मस्जिदें आज भी उनके साहस और सांप्रदायिक एकता की गूँज सुनाती हैं ।

महाबिरी देवी और दलित महिलाओं का दस्ता

पश्चिमी बिहार और उससे सटे उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में महाबिरी देवी (भंगी जाति) ने 22 महिलाओं की एक सशस्त्र टुकड़ी का गठन किया था। उनका उद्देश्य न केवल अंग्रेजों से लड़ना था, बल्कि समाज में व्याप्त छूआछूत और महिलाओं के प्रति अपमानजनक प्रथाओं को समाप्त करना भी था। 1857 में मुजफ्फरनगर और मुजफ्फरपुर के निकटवर्ती क्षेत्रों में ब्रिटिश घेराबंदी के दौरान, महाबिरी देवी और उनकी साथियों ने घरेलू औजारों को हथियार बनाकर अंग्रेजों पर हमला किया और लड़ते हुए शहीद हो गईं ।

तवायफों और हाशिए की महिलाओं की भूमिका

हालिया शोधों (जैसे 'तवायफनामा') ने यह उद्घाटित किया है कि 1857 में बनारस, पटना और कानपुर की तवायफों ने विद्रोहियों को न केवल आर्थिक सहायता दी, बल्कि उन्होंने एक जटिल गुप्तचर तंत्र (Espionage System) के रूप में भी कार्य किया। अजीजन बाई (जो मूलतः लखनऊ/कानपुर क्षेत्र की थीं पर बिहार के विद्रोहियों से संपर्क में थीं) और धरमन बीबी जैसी महिलाओं ने समाज के कथित 'नैतिक' बंधनों को दरकिनार कर राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया ।

क्षेत्रीय केंद्र और समुदायों का समन्वय: एक विहंगम दृष्टि

बिहार में 1857 का विद्रोह अत्यंत सुसंगठित था। जहाँ पटना विद्रोह का वैचारिक केंद्र था, वहीं जगदीशपुर सैन्य अभियान का और पलामू जनजातीय स्वायत्तता का प्रतीक था ।

पटना विद्रोह और पीर अली का बलिदान

3 जुलाई, 1857 को पटना में किताब विक्रेता पीर अली के नेतृत्व में हुआ विद्रोह शहरी मध्यवर्ग और सामान्य नागरिकों के आक्रोश का प्रतीक था । कमिश्नर विलियम टेलर ने पीर अली और उनके 21 साथियों को सार्वजनिक रूप से फाँसी दे दी, परंतु टेलर ने स्वयं स्वीकार किया कि "पीर अली का धैर्य और उनके अंतिम शब्द एक कट्टर दुश्मन के प्रति भी सम्मान पैदा करते हैं" । यह विद्रोह दर्शाता है कि कैसे एक सामान्य व्यवसायी ने समाज के विभिन्न वर्गों को ब्रिटिश सत्ता के आर्थिक शोषण के विरुद्ध एकजुट किया।

गया और शाहबाद का ग्रामीण प्रतिरोध

गया जिले में विद्रोह का स्वरूप अत्यंत उग्र था। यहाँ के विद्रोही राजवारों ने न केवल सरकारी खजाने को लूटा, बल्कि जेलों के दरवाजे तोड़कर कैदियों को भी रिहा कर दिया । मसौरही और पुनपुन के क्षेत्रों में विद्रोहियों ने थानों को ध्वस्त कर दिया और 'फिरंगी' सत्ता के हर प्रतीक को नष्ट कर दिया । कुंवर सिंह ने इस ग्रामीण असंतोष को एक दिशा प्रदान की और विभिन्न समुदायों के नायकों को अपनी सेना में महत्वपूर्ण स्थान दिया।

लोक-साहित्य और जन-मानस में क्रांति की अमरता

जहाँ ब्रिटिश आधिकारिक अभिलेखों में दलितों और आदिवासियों को 'लुटेरा' या 'अपराधी' कहा गया, वहीं लोकगीतों और लोक-कथाओं ने उन्हें नायक का दर्जा दिया । लोकगीत ऐतिहासिक सत्य के वे वाहक हैं जिन्हें ब्रिटिश दमन भी नहीं दबा सका ।

भोजपुरिया लोकगीतों का सामाजिक संदेश

भोजपुर के लोकगीत कुंवर सिंह की वीरता के साथ-साथ उनके सामान्य सिपाहियों के बलिदान का भी वर्णन करते हैं। धवल राम जैसे चारण कवियों ने उन गीतों की रचना की जिनमें ऊँच-नीच के भेदों को भुलाकर एकजुट होने का आह्वान किया गया था । एक प्रसिद्ध लोकगीत में कुंवर सिंह को "अनाथों का रक्षक" और "गरीबों का मसीहा" बताया गया है, जो यह प्रमाणित करता है कि उनकी सेना में दलितों और पिछड़ों की भारी संख्या थी ।

जनजातीय मुंडा और हो गीत

छोटानागपुर के क्षेत्रों में मुंडा और हो जनजातियों के लोकगीत 1857 के विद्रोह को 'उलगुलान' (महान हलचल) की पूर्व-पीठिका के रूप में देखते हैं । इन गीतों में ब्रिटिश सेना के हथियारों की तुलना में अपने पारंपरिक तीर-धनुष की श्रेष्ठता और अपनी मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम का वर्णन मिलता है।

दमन और उसके बाद: 'आपराधिक जाति' अधिनियम की विभीषिका

विद्रोह की विफलता के बाद ब्रिटिश प्रशासन ने बिहार के विद्रोही समुदायों पर अमानवीय अत्याचार किए। 1858 के बाद ब्रिटिश नीति का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि ऐसे 'हाशिए के लोग' दोबारा कभी सिर न उठा सकें । विद्रोही राजवारों, मुसहरों, संथालों और दुसाधों को नियंत्रित करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने 1871 में 'आपराधिक जाति अधिनियम' (Criminal Tribes Act) लागू किया । इस कानून के तहत इन समुदायों के पुरुषों, महिलाओं और यहाँ तक कि बच्चों की गतिविधियों पर भी सख्त पाबंदी लगा दी गई। यह औपनिवेशिक सत्ता की उस असुरक्षा का प्रमाण था जो 1857 में इन समुदायों द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस से उत्पन्न हुई थी ।

निष्कर्ष: एक समावेशी राष्ट्रवाद की नींव

बिहार में 1857 की क्रांति केवल एक क्षेत्रीय विद्रोह नहीं था, बल्कि यह भारत के 'संपूर्ण जनांदोलन' का पहला महान अध्याय था। इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि दलितों, आदिवासियों और महिलाओं की भागीदारी ने इस क्रांति को वह सामाजिक आधार प्रदान किया जिसके बिना यह संघर्ष कुछ महीनों में ही समाप्त हो गया होता।
जहाँ राजवारों ने अपनी देह और श्रम की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी, वहीं नीलम्बर-पीताम्बर ने अपनी सांस्कृतिक स्वायत्तता और भूमि की रक्षा के लिए प्राण दिए। महिलाओं ने, चाहे वे उच्च वर्ग की हों या समाज के कथित निम्न स्तर

की, अपनी सक्रियता से यह सिद्ध कर दिया कि राष्ट्र की रक्षा के लिए वे किसी भी बलिदान को तैयार हैं। बिहार में 1857 की यह विरासत आज भी हमें यह स्मरण कराती है कि वास्तविक स्वतंत्रता तभी संभव है जब वह समाज के अंतिम व्यक्ति के अधिकारों और सम्मान की सुरक्षा करे। इन 'विस्मृत नायकों' का योगदान हमारे आधुनिक लोकतांत्रिक भारत की नींव का वह पत्थर है जिसे पहचानना और सम्मान देना हर नागरिक का कर्तव्य है।

संदर्भ (References):

- दत्त, के.के. *बिहार में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास, खंड I: 1857-1928*, पटना: बिहार सरकार, 1957 ।
- तिवारी, बद्री नारायण. *अतीत को जागृत करना: दलित और 1857 की स्मृतियाँ,* दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007 ।
- जोशी, पूरन चंद्र (सं.). *1857 लोकगीतों में,* पटना: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, 1994 ।
- देवी, ऋतंभरी. *भारतीय विद्रोह: बिहार में 1857*, दिल्ली: चेतना पब्लिकेशंस, 1977 ।
- पाटी, बिस्वमय (सं.). *1857 का महान विद्रोह: दक्षिण एशियाई इतिहास में विविधताएँ,* लंदन: रूटलेज, 2010 ।
- गुप्ता, चारु. *सबाल्टर्न स्पीक्स: 1857 का दलित महिलाओं का प्रति-इतिहास,* 2007 ।
- मल्लेसन, जी.बी. *भारतीय विद्रोह 1857*, न्यूयॉर्क: स्क्रिबनर, 1891 ।
- झा, जटा शंकर. *1857 का पटना षड्यंत्र*, बिहार स्टेट आर्काइव्स ।
- डाल्टन, एडवर्ड ट्युइट. *पलामू का विद्रोह और जनजातीय प्रतिरोध,* ब्रिटिश अभिलेखीय रिपोर्ट, 1858 ।
- सिंह, प्रेम. *हिंदी उपन्यासों में 1857: चरित्र और भावना*, 2007 ।
- सरकार, जगदीश नारायण. *मानभूम और छोटानागपुर में मुतयनी,* बिहार शोध संस्थान ।
- बहादुर, मिर्जा बिरजिस कादिर रमजान अली. *1857 के मुतयनी पत्र,* बिहार स्टेट आर्काइव्स ।
- अहमद, क्यू. और झा, जे.एस. *कुंवर सिंह और अमर सिंह की जीवनी,* पटना: के.पी. जायसवाल शोध संस्थान, 1957 ।
- मुकर्जी, रुद्रंगशु. *अवध विद्रोह में और 1857 की लहरें*, 2007 ।
- साहय, रवि शंकर. *1857 में छोटानागपुर के जनजातीय समुदाय*, 2011 ।
- चौधरी, वी.सी.पी. *1857 के विद्रोह में बिहार के समुदायों का योगदान*, 1976 ।
- अशरफ, के.एम. *1857 के विद्रोह और मुस्लिम पुनरुत्थानवादी*, 2007 ।
- स्टोक्स, एरिक. *किसान और राज: 1857 में ग्रामीण समाज*, 1978 ।
- सज्जाद, मोहम्मद. *बिहार में मुस्लिम राजनीति और 1857 की विरासत*, 2014 ।
- कोलफ, डिर्क एच. *नौकरी, सिपाही और राजपूत: 1857 की सामाजिक जड़ें*, 1990 ।